भारत की महान नारियां

झलकारी बाई



भारत की महान नारियां

झलकारी बाई

अनसूया 'अनु'

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

फाल्गुन 1914 (फरवरी 1993)

पुनर्मुद्रण : शक् 1919 (1997)

तृतीय संस्करण : शक् 1923

ISBN : 81-230-09771

मूल्य 20.00 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001, द्वारा प्रकाशित

विक्रय केंद्र ● प्रकाशन विभाग

☐ पटियाला हाउस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001

☐ सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001

☐ हाल नं. 196, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

☐ कामर्स हाउस, करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, मुंबई-400038

☐ 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कोलकाता-700069

☐ राजाजी भवन, बेसेंट नगर, चेन्नई-600090

☐ बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004

☐ प्रेस रोड, तिरुअनंतपुरम-695001

☐ 27/6, राममोहन राय मार्ग, लखनऊ-226001

☐ राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004

☐ 'एफ' विंग, प्रथम तल, केंद्रीय सदन, कोरामंगला, बंगलौर-560034

☐ अंबिका काम्पलेक्स, प्रथम तल, पालदी, अहमदाबाद-380007

☐ नौजान रोड, उजान बाजार, गुवाहाटी-781001

विक्रय काउंटर ● पत्र सूचना कार्यालय

☐ 80, मालवीय नगर, भोपाल-462003

☐ सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, 'ए' विंग, ए.बी. रोड, इंदौर, (म.प्र.)

☐ बी-7बी, भवानी सिंह मार्ग, जयपुर-302001 (राजस्थान)

शिवम् ऑफसैट प्रेस, ए-12/1, नरायणा इंडिस्ट्रयल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित।

प्रकाशकीय

इतिहास इस बात का साक्षी है कि अनेक महापुरुषों के निर्माण में नारी का प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान रहा है। कहीं नारी प्रेरणा-स्रोत रही है, तो कहीं उत्प्रेरक शक्ति। भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही नारी का महत्व स्वीकार किया गया है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" की भावना हमारी सांस्कृतिक विरासत है।

भारतवर्ष में समय-समय पर ऐसी अनेक नारियां हुई हैं जिन्होंने समाज में एक आदर्श कायम किया है। प्रकाशन विभाग ने ऐसी नारियों के जीवन वृत्त से पाठकों को परिचित कराने के लिए 'भारत की महान नारियां' नामक श्रृंखला प्रारम्भ की है। आशा है इस श्रृंखला को सुधी पाठकों का स्नेह मिलेगा और वे इसे उपयोगी पाएंगे।

अनुक्रम

प्रथम स्वाधीनता संग्राम

भारत की स्वतंत्रता का इतिहास बलिदानों से भरा है जिसमें सभी वर्गों का एक-सा योगदान रहा है। आजादी की लड़ाई में स्त्रियां तथा पिछड़ी जातियां भी पीछे नहीं रहीं। उस समय भारतवासियों के सामने आजादी हासिल करना एक ऐसा उद्देश्य बन गया था, जिसने सारे देश को एक सूत्र में बांधा।

सन् 1857 में आजादी का प्रथम युद्ध शुरू हुआ था। हम यहां इस युद्ध की एक वीरांगना की जीवनी दे रहे हैं जिसे बहुत कम लोग जानते हैं। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई को सब जानते हैं पर जिसने उसे झांसी की रानी बनाया, उस झलकारी बाई का नाम इतिहास के पृष्ठों में धूमिल है।

कौन थी यह महान नारी और कहां गए वे लोग जो आजादी के लिए हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए। कितना त्याग किया गया होगा उन्होंने, तब कहीं इस स्वतंत्रता को पा सके हम। यह सब जानने के बाद ही हमें स्वतंत्रता का वास्तविक मूल्य ज्ञात हो सकेगा। इतिहास साक्षी है कि भारत सैकड़ों वर्ष अंग्रेजों के अधीन रहा। जीवन यदि केवल भोजन तथा अन्य सुख-सुविधा जुटाने भर का नाम है तो हम पराधीनता में भी जीवित थे, लेकिन स्वाभिमानपूर्वक चलना हम भूल चुके थे। उन दिनों सिर उठा कर चलना गुनाह था। स्वेच्छा से कोई निर्णय लेना बहुत बड़ा जुर्म था। अंग्रेज भारतीयों के स्वामी थे। उनके हितों को पोसना, उनकी शान-मान को बनाए रखना ही वास्तव में नियम और कानून था। देशवासियों को केवल चाटुकारिता तथा गुलामी की जंजीरों में अपना जीवन-यापन करना पड़ता था।

स्वाभिमानी भारतीय कब तक यह सहते। अंततः अन्याय के विरुद्ध आवाजें उठने लगीं। परतंत्रता के घृणित बोझ को उतार फेंकने के प्रयास सांस लेने लगे। क्रांति पैदा हुई। लोगों में जोश उबलने लगा। अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध विद्रोह होने लगे। बगावत भड़क उठी। जगह-जगह सभाएं होने लगीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रयत्न दिन-प्रतिदिन जोर पकड़ने लगे। गुप्त सभाएं आयोजित होने लगीं। भारतीय शूरवीर हथेली पर जान रखकर आगे बढ़ते रहे।

आजादी की चिंगारी 1857 में आग बन कर भड़क उठी. बहुत से वीरों ने अपनी जान गंवाई। आजादी के झंडे को खुले आसमान में लहराने के लिए कितनी ही महान विभूतियों ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए। स्वतंत्रता संग्राम के वीर सैनानियों को कौन नहीं जानता। चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, तांत्या टोपे, सुभाष चन्द्र बोस, झांसी की रानी वीरांगना लक्ष्मी बाई आदि बहुत से ऐसे नाम हैं, जिनकी अद्भुत शौर्य गाथाएं आज भी धूमिल नहीं पड़ीं। महारानी लक्ष्मी बाई के नाम के साथ एक और नाम याद आता है, जो अल्पज्ञात है। यह नाम है झलकारी बाई। झलकारी बाई महारानी लक्ष्मी बाई की परम सखियों में से थी। वह लक्ष्मी बाई की विश्वासपात्र थी और एक नारी सेना 'दुर्गा-दल'



की कमांडर थी। लक्ष्मी बाई की आन-बान और शान की रक्षा का उत्तरदायित्व उसी पर था। झलकारी बाई उन वीर महिलाओं में से एक है जिन्होंने अपनी वीरता और त्याग के कारण अपने देश का नाम उज्ज्वल किया। वह इतिहास में अल्पज्ञात होते हुए भी इतिहास-पुरुष थी।

कहा जाता है कि गगन-मंडल में ऐसे अनेक सूरज हैं जो हमारे सूरज से बहुत बड़े तथा अधिक गर्म हैं लेकिन बहुत दूर होने के कारण वे हमारी दृष्टि से ओझल तथा अनजाने हैं। बहुत खोज करनी पड़ी उनकी स्थिति जानने के लिए। झलकारी बाई भी गगन-मंडल का ऐसा ही तारा है।

बचपन तथा परिवेश

झलकारी बाई वीरता, निर्भयता तथा कोमलता की सजीव मूर्ति थी। रूप, गुण तथा शौर्य प्राप्ति के बाद भी अभिमान उसे छू नहीं सका था। उसकी एक झलक न्याय और सत्य को जीवन प्रदान कर अन्याय को नष्ट तथा क्षीण कर देने में समर्थ थी। कठोरता, दृढ़ता और कोमलता का अनोखा संगम थी झलकारी बाई।

झलकारी बाई की जन्मतिथि 1830-35 के बीच मानी जाती है। उसका जन्म झांसी के उत्तर-पश्चिम में भोजला नामक ग्राम में हुआ। झलकारी के पिता का नाम मूलचन्द्र तथा माता का नाम धनिया था। मूलचन्द्रजी फौज में ऊंचे ओहदे पर लगे हुए थे। वह एक बहादुर सैनिक तथा जाने-माने तीरंदाज थे। वह कोरी परिवार के थे। उनके घर का वातावरण स्वतंत्र, स्वच्छंद, त्याग और देशभक्ति भावना से परिपूर्ण था। धनिया अपने सैनिक पति की तरह बहादुर, सपष्ट और सुलझे विचारों की महिला थी। साधारण वेशभूषा, सामान्य खानपान परंतु उच्च विचारों की छाया में झलकारी ने खड़ा होना सीखा। उसका परिवार अंधविश्वासों से कोसों दूर तथा आधुनिकता के बहुत निकट था। यूं तो धर्म-कर्म में पूर्ण विश्वास था झलकारी के परिवार का लेकिन बनावट, ढोंग, झूठे घमंड और दिखावे की भावना उन्हें छू भी नहीं पाई थी। पति-पत्नी एक दूसरे के पूर्ण सहयोगी और दुःख-सुख के साथी थे।

अन्याय से टकराना, संघर्ष करना, सुपथ पर आए कंटकों, बाधाओं से जूझते रहना झलकारी बाई का स्वभाव बन गया था। इन सब गुणों की शिक्षा उन्हें कभी अलग से नहीं दी गई। जैसे दुकानदार अपने बेटे को छुटपन से दुकान पर बैठाकर बिना किसी विशेष प्रशिक्षण के व्यापारी बना देता है, उसी तरह झलकारी भी पिता के साथ उठते-बैठते, खाते-पीते बड़ी होते-होते एक परिपक्व देशभक्त बन गई। झलकारी के जन्म के समय ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की थी कि झलकारी बाई बहुत ही उज्ज्वल भविष्य लेकर आई है। उसका कहना था कि वह रानी-समान सुख साम्राज्य की स्वामिनी होगी। वह अपने वंश, अपने देश, अपने राज्य का नाम और गौरव बढ़ाएगी। बड़े-बड़े नेत्र, सांवला रंग, आकर्षक नाक-नक्श, ओजस्वी ललाट वाली झलकारी का व्यक्तित्व शौर्य का प्रतीक था। धनिया और मूलचन्द्र उसे पाकर धन्य हो गए थे। वह उन दोनों की आंखों की ज्योति थी। माता-पिता समान रूप से उस होनहार बालिका पर बलिहारी थे।

झलकारी शनैः शनैः बड़ी होने लगी। उसके खेल अन्य साधारण बालक-बालिकाओं से भिन्न थे। गुड्डे-गुड़िया के खेल को छोड़कर वह तीर, तलवार, भाले, बरछी की ओर आकृष्ट होने लगी। पेड़ों पर चढ़ना, ऊंचाइयों से छलांग लगाना, जंगल के बीहड़ रास्तों में धमाचौकड़ी मचाना, जंगली पशु-पक्षियों के पीछे भागते हुए किलोल करना आदि यही सब उसकी रुचि थी। जंगली फूल-पत्ते बटोरने और उनसे श्रृंगार करना उसे भाता। सोने-चांदी के आभूषण उसे मोह नहीं पाते थे। बालिका सुलभ आडम्बरों में

उसका मन नहीं रमता था। उसके पिता सेना में होने के कारण छुट्टियों में ही घर आते थे। पिता भी उसे हथियारों के प्रयोग करना सिखाते। झलकारी पूरी लगन से यह सब सीखती। पिता उसे कुशल फौजी बनाना चाहते थे जिसका प्रशिक्षण देने में उनकी ओर से कोई कोर-कसर बाकी नहीं थी। झलकारी भी बड़ी तत्परता से सब सीखती गई। शहर से दूर एक छोटे से गांव भोजला में पलकर झलकारी सुदृढ़ तथा फौलादी बनती गई। दिन भर प्रकृति की गोद में मचलती और रात को अपनी मां के स्नेह-आंचल में सुरक्षा पा निश्चिंत सो जाती। गांव के किनारे नदी-ताल होने के कारण वह एक कुशल तैराक भी बन गई। वह अपने पिता के साथ शिकार पर भी जाती थी। पशु-पक्षियों,वृक्ष और लताओं से वह भलीभांति परिचित हो गई थी। प्रकृति की गोद में व्यावहारिक शिक्षा तो झलकारी ने जी भर कर पाई, लेकिन पुस्तकीय ज्ञान से वह सर्वथा वंचित ही रही। कुछ तो उस समय स्त्री शिक्षा का प्रचलन भी नहीं था और उस पर ग्रामीण समाज में तो बिलकुल भी नहीं। यूं भी गांव में दूर-दूर तक विद्यालय नाम की कोई संस्था नहीं थी जिसमें झलकारी को शिक्षा प्राप्ति के लिए भेजा जा सकता। साधन और सुविधा के अभाव में चाहते हुए भी झलकारी के माता-पिता उसे स्कूली शिक्षा नहीं दिलवा सके। वैसे किताबी ज्ञान से कही अधिक महत्वपूर्ण तो व्यावहारिक ज्ञान है, जिसमें झलकारी पारंगत हो चुकी थी। उस वीरांगना के पांव तो पालने में ही दिखने लगे थे। रहन-सहन में बहुत साधारण लेकिन अपने क्रियाकलापों में अत्यधिक असाधारण झलकारी नदी नालों को टापती, बीहड़ भयानक जंगलों में हिरनी-सी कूदती-फांदती, घातक हथियारों से खेलती, सहेजती और अपने देश, समाज, राज्य के लिए कुछ कर पाने की भावना को मन-ही-मन संजोए हुए वह अब यौवन की दहलीज पर आ चुकी थी। माता के साथ मंदिर जाना, पूजन करना, सहेलियों के संग घूमना, मेला देखना, गाना-बजाना भी झलकारी की रुचियों में सम्मिलित था लेकिन उन सब बातों में उसका मन नहीं रमता था।

एक बार की बात है, वह अपनी माता, गांव की मुंहबोली चाची-ताई तथा सखियों के साथ गांव के मेले में गई। मेले में लगी चूड़ी की एक छोटी सी दुकान पर झलकारी की माता तथा स्त्रियां चूड़ियां पहनने लगीं। झलकारी से भी उसकी माता ने चूड़ी चढ़वाने के लिए कहा तो झलकारी ने कहा, "रहने दो मां, क्या करना है।" उपस्थित महिलाओं ने भी झलकारी बाई से चूड़ियां पहनने की जिद की। इस पर उसने चूड़ी वाली से हंस कर कहा, "कांच की नहीं, अमर लोहे जैसी मजबूत चूड़ियां हों तो चढ़ा दो मेरे हाथों में। यूं कांच की चूड़ियां कितनी बार पहनाओगी। चढ़ाते-चढ़ाते ही बराबर हो जाएंगी।"

झलकारी ने यह बात हंस कर कही थी लेकिन कितना बड़ा और कड़वा सच छिपा था उसके कथन में। भला उन फौलादी कलाइयों में कांच की चूड़ियां कितने समय ठहरतीं। कुछ स्त्रियां हंस पड़ीं और कुछ ने झलकारी की बात सुनकर दांतों तले उंगली दबा ली। उसकी मुंहफट मौसी बोल पड़ी, "जि छोरी तो आसमान छूने की बात करे है, धरती पै पांव टिका के चल बेट्टी।"

सम्भवतः वह नहीं जानती थी कि झलकारी के पांव इतनी मजबूती से धरती पर टिके हैं कि धरती एक बार को खिसक सकती है लेकिन पांव नहीं। उसका निश्चय और संकल्प कुछ था ही ऐसा। वह किसी समस्या पर पहले गहन विचार करती और जब ठान लेती तो उसे पूरा करके ही दम लेती। मां



ने एक बार उसे जंगल से एक बूटी लाने के लिए कहा। उनका खरगोश जख्मी हो गया था तथा उसके रक्त प्रवाह को रोकने के लिए बूटी की जरूरत थी। झलकारी अपनी सहेलियों के साथ जंगल पहुंची। बूटी कहीं मिलने में नहीं आती थी। सभी साथी थककर घर लौट आए लेकिन झलकारी खाली हाथ लौटने वाली कहां थी। आखिर अथक मेहनत कर जंगल से बूटी ढूंढ़ ही लाई।

मां ने कहा, "अगर बूटी नहीं मिल रही थी तो वापस चली आती।" झलकारी बोली, "नहीं मां, मिलती क्यों नहीं, खरगोश से अधिक तकलीफ तो नहीं हुई मुझे। तुम उसे जल्दी दवा लगा दो।"

साहसिक कार्य

सन 1850 की बात है। झलकारी अपनी माता के साथ अलसाई-सी अवस्था में लेटी हुई थी। वह रात बड़ी भयानक थी। चारों और निपट अंधकार छाया था। कुत्ते भौंक रहे थे या कभी-कभी टिटहरी की आवाज सुनाई पड़ती। अचानक एक जोर की आवाज आई—"मारो मारो.." दूसरी आवाज थी— "अरे मैं मर गया।" कराहट के स्वर साफ सुनाई पड़ रहे थे। यह आवाज गांव के मुखिया की थी। डाकुओं ने मुखिया के घर को घेर लिया था। झलकारी को स्थिति समझने में देर नहीं लगी। उसने पहले अपना कछोटा (वस्त्र) कसा और फिर मुखिया के आंगन में कूद गइ। उसके हाथ में केवल एक मोटा डंडा था जिससे उसने डाकुओं पर प्रहार किया। उसने डाकुओं को धर दबोचा। वे हक्के-बक्के रह गए। डंडे की मार खाकर डाकू भाग गए। डाकू भी एक दो नहीं, पूरे दस थे। मुखिया झलकारी की वीरता और साहस का ऋणि हो गया। वह उसे अपनी बेटी की तरह प्यार करने लगा।

अक्तूबर 1852 की एक और घटना है। गांव के निकट एक मेला लगा था। संध्या का समय था। झलकारी अपनी सखियों के साथ मेले में जा रही थी। रास्ता सुनसान था। डाकुओं ने झलकारी और उसकी सखियों को घेर लिया। उन्होंने सबको गहने उतारने के लिए कहा। अन्य सखियों के साथ झलकारी भी अपने गहने उतार कर डाकुओं को देने लगी। गले का गठला नहीं उतर रहा था। झलकारी ने उसके डोरे को काटने के लिए डाकुओं से कोई धारदार हथियार मांगा। एक डाकू ने कटार उसको थमा दी। कटार के हाथ में आते ही झलकारी रणचंडी बन गई। बड़ी फुर्ती से झलकारी ने उसी कटार से उस डाकू को मौत के घाट उतार दिया। उसने अन्य चार डाकुओं को भी जख्मी कर दिया। फिर तो सभी डाकू सिर पर पैर रखकर भागते नजर आए। इस तरह झलकारी ने अपनी तथा अपनी सखियों की रक्षा की। आपत्ति के समय वह कभी अपना मानसिक संतुलन नहीं खोती थी।

सन् 1852 के मई मास के दिन थे। एक गांव में आग लग गई। आग की लपटें एक घर से दूसरे घर की ओर बढ़ती जा रही थीं। स्त्री-पुरुष और बच्चे त्राहि-त्राहि कर रहे थे। यह बहादुर युवती ऐसे में यहां पहुंची। अबोध शिशुओं को आग से निकालने के लिए वह आग में कूद पड़ी। उसने जब तक गांव के सारे बच्चों को आग से बाहर नहीं निकाल लिया, वह इसी तरह जूझती रही। वह आग की लपटों से झुलस गई लेकिन कष्ट सहकर दूसरों की रक्षा करना तो उसका स्वभाव बन गया था।

झलकारी का भ्रमण-स्थल आसपास के वन थे। बचपन से ही वह इन जंगलों से भली-भांति परिचित हो गई थी। जंगल के झाड़-झंकाड़ भरे उलझे-उलझे पथ उसे बहुत प्रिय थे। वह अपने संगी-साथियों को लेकर वहां पहुंच जाती। पूरी मंडली जंगली सुअरों, हिरनों तथा सियारों का पीछा करती। मां यह देखकर दुःखी भी होती लेकिन झलकारी की धमा-चौकड़ी जमती ही रहती। हां, पिता अपनी बेटी में बेटे का रूप निहारते। वे गदगद हो धनियां से कहते, "झलकारी हमारा बेटा होती तो कितना अच्छा

होता।" झलकारी जब पिता का यह वाक्य सुनती तो हृदय में पूरा विश्वास भरकर कहती, "बापू, मैं भी तो आपका बेटा हूं। देख लेना बेटों से बढ़कर काम करूंगी।"

एक दिन अपने साथियों में खेलते समय उसे गाय के जोर से रंभाने की आवाज आई। कोई हिंसक पशु गाय को घायल कर गया था। झलकारी का हृदय करुणा से भर गया। गाय के रंभाने की आवाज का पीछा करती वह अपने बाल दल को लेकर गाय तक पहुंच गई। गाय को घायल अवस्था में देखकर उसने किसी जंगली घास से उसका उपचार किया तथा पत्तों से उसे ढक दिया। वह प्रतिदिन उसके लिए चारा लेकर आती और अपने हाथ से उसे खिलाती। वह गाय के पास तब तक आती रही, जब तक गाय स्वस्थ नहीं हो गई। झलकारी कभी-कभी तोता, मैना तथा खरगोश के बच्चों को भी अपने घर ले जाती और बड़े प्यार से खिला-पिला कर उन्हें वापिस उनके स्थान पर छोड़ आती। वह उन्हें पिंजरे में रखकर उनकी स्वच्छंदता नहीं हरना चाहती थी।

नदी पानी में मछली पकड़ना, ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर चढ़कर फल तोड़ना, उपवन से जंगली फूल तोड़ कर इकट्ठे करना, भेड़-बकरियों को चारा देना और बीमार पशुओं का उपचार करना उसके प्रिय शौक थे।

श्रृंगार के नाम पर जंगल के फूल और लता-वल्लरी ही उसके सौंदर्य साधन थे। सोने-चांदी के जेवर उसे कदापि नहीं मोह सके। वह मानव रूप में जन्मी वन-उपवन में स्वछंद हिरिणी-सी कुलांचें भरती थी। उसे प्रकृति की गोद में अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव होता था। कष्ट से घिरे नाते-रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों की यथा सम्भव सहायता करना वह अपना धर्म समझती थी। उसने दलित समाज में जन्म लेकर भी अपने को कभी दलित नहीं माना। वह शौर्य की जीती-जागती मशाल थी।

हल्के-फुल्के हंसी-मजाक करना भी झलकारी का स्वभाव था लेकिन उसके मजाक के पीछे भी एक कटु सत्य छिपा होता था। एक बार उसने अपनी चाची से मजाक में कह दिया, "चाची देखना, एक दिन मैं झांसी की रानी के साथ रणभूमि में जाऊंगी और दुश्मनों के छक्के छुड़ाऊंगी।" इस पर झलकारी की चाची बोली— "जि छोरी तो आसमान की बात करे है। झलकारी, जमीन पर पांव टिका कै चल।"

बेचारी भोली-भाली चाची को क्या पता था कि दृढ़ संकल्प रखने वाली झलकारी के पांव इतनी मजबूती से जमीन पर टिके हैं कि धरती खिसक जाए पर पांव नहीं हिलेंगे। बहुत बड़ा सत्य कह गई थी झलकारी।

गृहस्थ जीवन में प्रवेश

झलकारी बाई अब यौवन में प्रवेश कर चुकी थी। मां का आदेश था कि वह उसके साथ मंदिर जाएगी, पूजा करेगी, व्रत उपवास रखा करेगी। मां की आज्ञा झलकारी के लिए शिरोधार्य थी। होली, दीवाली, तीज-त्योहारों और शादी ब्याह पर गाना-बजाना झलकारी को भला लगता था।

एक दिन झलकारी अपनी माता धनिया के साथ मंदिर में जल चढ़ाने गई। पूजन आदि के बाद झलकारी और धनिया मंदिर से बाहर आ रही थीं। वहां उन्हें पूरन नाम का युवक मिला। पूरन आकर्षक व्यक्तित्व का एक बांका जवान था। वह झांसी की रानी की फौज में था। बड़ा अच्छा गोलंदाज था। झलकारी को वह बहुत भला लगा। माता धनिया को भी वह पसंद आ गया। मूलचन्द्र और धनिया ने झलकारी का विवाह पूरन से तय कर दिया। पूरन को भी झलकारी बहुत अच्छी लगी और वह विवाह के लिए सहर्ष तैयार हो गया।

पूरन का झांसी की सेना में एक विशिष्ट स्थान था। झलकारी रूप-लावण्य में किसी से कम नहीं थी। पूरन झलकारी को पत्नी के रूप में पा कर अत्यंत प्रसन्न था। उसकी बारात बहुत धूमधाम से चढ़ी। पूरन को झलकारी के वर के रूप में देखकर सारा गांव खुशी से फूला नहीं समा रहा था। मूलचन्द्र और धनिया की ही बेटी नहीं थी झलकारी वह तो सारे गांव की प्यारी बेटी थी। उसके विवाह में सब बढ़-चढ़ कर सहयोग दे रहे थे। लोग तन-मन से बारात के स्वागत-सत्कार में जुटे हुए थे कि कहीं कोई कमी न रह जाए। कहीं से घी के कनस्तर आ रहे थे, कहीं से शाक-भाजी तो कहीं से ढेरों शगुन। मुखिया ने पूरे गांव और बारात को दावत दी। वह उस घड़ी को भूल नहीं पाया था जब झलकारी ने जान पर खेलकर मुखिया के परिवार को डाकुओं से बचाया था। तभी से झलकारी मुखिया के परिवार का अंग बन गई थी। उसने अपनी लाडली के विवाह के प्रबंध में कोई कमी नहीं छोड़ी। विवाह बंधन में बंधकर झलकारी भोजला छोड़ झांसी के नए पुरा में पहुंच गई। बेटी पराया धन होती है, यह भावना उन दिनों आज से कहीं अधिक थी।

झलकारी की सास माया अपनी बहू पर जी-जान से न्योछावर थी। जब झलकारी ने उन्हें बताया कि उसके खानदान की तीन पीढ़ियों ने सेना में रहकर देशसेवा की है और कुशल तीरंदाज पिता द्वारा उसने शस्त्र चलाने की पूरी शिक्षा ली है तो सास अपनी बहू के वीरोचित गुणों को सुन फूली न समाई। झलकारी अपने पति के साथ सच्ची सहधर्मिणी के रूप में रहना चाहती थी। घर में परिवारजनों की सेवा-सुश्रूषा और हर काम में अपना सहयोग देना वह अपना धर्म समझती थी। झलकारी के हाथ-पांवों में कुछ पुराने जख्मों के निशान देखकर एक दिन उसकी सास ने पूछा, "तुम्हारे हाथ-पांवों में ये जख्मों के निशान कैसे हुए ?" उत्तर में झलकारी ने उन्हें बताया कि एक बार तेंदुए को मारने के लिए गांव के लोगों ने उसे आमंत्रित किया था। वह अपनी बाल सेना के साथ वहां पहुंच गई। तेंदुआ तो मार दिया लेकिन उसके हाथ-पांवों में खासे जख्म हो गए जिनके चिह्न अब भी शेष हैं। माया अपनी बहू की सब बातें मंत्रमुग्ध होकर सुनती और उसके वीरोचित गुणों पर गद्‌गद् होती रहती।

रानी लक्ष्मी बाई से मिलन

शिवरात्रि के पर्व पर झलकारी ने अपनी सास के साथ पूरा दिन उपवास किया। रात्रि के समय व्रत की समाप्ति के लिए शिवपूजन जरूरी था। चूंकि शिवमंदिर किले के प्रांगण में था इसलिए



माया वहां अकेले जाने से हिचकिचा रही थी। शेष सभी ग्रामवासी संध्या को ही अर्घ्यजल चढ़ा कर चले गए थे। अपनी बहू के अदम्य साहस और धैर्य से प्रभावित माया बहू के कहने पर उसके साथ शिवपूजन के लिए चल दी। शिवपूजन के पश्चात जब मंदिर का घंटा बजा तो घंटे की आवाज सुनकर महारानी लक्ष्मी बाई ने उन्हें बुलवा भेजा। महारानी यह जानना चाहती थीं कि इस समय मंदिर में कौन पूजन कर रहा है। झलकारी निस्संकोच अपनी सास को लेकर रानी के महल में पहुंची। रानी लक्ष्मी बाई विश्राम की मुद्रा में लेटी हुई थीं। माया और झलकारी ने रानी का सादर अभिवादन किया। तत्पश्चात, महारानी ने माया और झलकारी का परिचय पाना चाहा। झलकारी ने रानी लक्ष्मीबाई को अपने खानदान से अवगत कराते हुए कहा कि उसके पति पूरनचन्द झांसी की सेना में एक गोलंदाज है। वह गांव भोजला निवासी मूलचन्द्र और धनिया की बेटी है। उसकी माता स्पष्ट और सुलझे हुए विचारों की महिला है। पिता मूलचन्द्र सेना में हैं और बहुत अच्छे तीरंदाज हैं। कुशल सैनिक बनने का प्रशिक्षण देते हुए पिता ने उसे तीर, तलवार, बरछी, भाले, बंदूक तीरंदोजी जैसे रण-कौशलों का उचित समय पर प्रयोग करना सिखलाया है।

महारानी लक्ष्मीबाई उसकी बातों से बहुत प्रभावित हुईं। रानी ने माया को ऐसी वीर बहू पाने पर बधाई दी और उसे अपनी सेवा में रखने की विनती की। माया सहर्ष मान गई और घर जाकर उसने यह खुशखबरी सुनाई कि उसकी बहू रानी लक्ष्मी बाई की प्रिय बन गई है।

दुर्गा दल का गठन

रानी लक्ष्मी बाई ने झांसी की सुरक्षा हेतु झलकारी को स्त्री सेना बनाने के लिए आमंत्रित किया। देखते- ही-देखते आनन-फानन झलकारी ने महिलाओं को एकत्रित किया। अगले ही दिन से महिलाओं को अखाड़े का अभ्यास, मलखम्भ, अस्त्र-शस्त्र का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। झलकारी उनके तन को फौलाद का बना देना चाहती थी। वह उनके हृदय में देश की खातिर मर मिटने की तीव्र लालसा जगाती। इस प्रकार वह उनका अबलापन दूर कर देना चाहती थी। वह महिलाओं को समझाती कि केवल अच्छा भोजन, कीमती वस्त्र अथवा सुख-वैभव को भोगना ही जीवन नहीं अपितु किसी उद्देश्य के लिए जीना तथा देश के लिए मर मिटना ही मानव जन्म की सफलता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्राण भी गंवाने पड़ें तो जीवन धन्य हो जाता है। उसने महिलाओं को इस बात से अवगत कराया कि महाराज गंगाधर की मृत्यु के बाद रानी बहुत अकेली पड़ गई हैं। नृशंस अंग्रेज झांसी को हड़पना चाहते हैं इसलिए वे रानी के दत्तक पुत्र को वारिस की मान्यता प्रदान नहीं कर रहे। झांसी पर संकट के बादल गहरा रहे हैं। किसी भी समय बिजली टूटकर त्राहि-त्राहि मचा सकती है। न जाने कब बादल फट जाएं और झांसी कष्टों में डूब जाए।

स्त्री सेना, जिसका नाम 'दुर्गा दल' रखा गया, इसी उद्देश्य से गठित किया गया था कि वह रानी की आन-बान और शान तथा झांसी की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले। सभी स्त्रियां रानी की विश्वासपात्र बनकर राज्य की सुरक्षा में अपना सहयोग देने के लिए तत्पर रहें और इस प्रकार लक्ष्मी बाई की ताकत और हौसले को बुलंद रखें।

महारानी लक्ष्मी बाई ने बताया कि उसका एक विश्वसनीय कार्यकर्ता खुदाबख्श नहीं लौटा है जबकि उसे दो दिन पहले आ जाना चाहिए था। उसने झलकारी को अपनी चिन्ता से अवगत कराया कि ऐसे बुरे समय में उसके विशेष सेवाकर्मी योद्धा को कहीं से भी ढूंढ़कर लाना होगा। झलकारी अपने दुर्गा दल की कुछ वीरांगनाओं को लेकर खुदाबख्श को ढूंढ़ने निकल पड़ी। खुदाबख्श बीहड़ जंगलों में घायल अवस्था में पड़ा था। झलकारी बाई ने उसका उपचार कर उसे कुछ स्त्री सैनिकों के साथ महल की ओर रवाना कर दिया। उन दिनों डाकू सागर सिंह का आतंक उस इलाके में चारों ओर फैला हुआ था। डाकू सागर सिंह बहुत ही निर्भीक और बहादुर था। ऐसे कठिन समय में झांसी को उस जैसे बहादुरों की अत्यंत आवश्यकता थी। इसलिए झलकारी ने मन-ही-मन उसका हृदय-परिवर्तन करने का दृढ़ निश्चय किया और उसकी खोज में चल दी। नदी-नाले और जंगल पार कर वह आखिर सागर सिंह की खोह तक पहुंच ही गई। खोह के मुहाने पर जाकर उसने डाकू सागर सिंह को ललकारा। दोनों तरफ से खूब गोलियां चलीं जिसमें डाकू सागर सिंह घायल हो गया।



झलकारी ने सागर सिंह से लड़ाई शांत करने के लिए कहा और अपना निश्चय सुनाते हुए वह सागर सिंह से बोली कि तुम एक शक्तिशाली योद्धा हो। अपनी शक्ति को इन व्यर्थ की बातों में नष्ट न करो। यह जिल्लत का जीवन तुम जैसे कर्मयोगियों के लिए नहीं है। झांसी पर अंग्रेजों के आक्रमण के घनघोर बादल घिरे हुए हैं। तुम्हारी धरती को तुम्हारे जैसे शूरवीरों की बहुत आवश्यकता है। आओ, हमारे साथ चलो। हम तुम्हें लेने आए हैं। तुम अपनी शक्ति का प्रयोग सही स्थान पर करो और सच्चे कर्मवीर बन अपनी झांसी को सुरक्षा प्रदान करो।

सोच-विचार के लिए सागर सिंह को पर्याप्त समय दिया गया। कुछ देर के बाद सागर सिंह अपने गिरोह को लेकर झलकारी के साथ झांसी की ओर चल पड़ा। इस प्रकार झलकारी ने अपनी ओजस्वी वाणी से डाकू सागर सिंह का हृदय-परिवर्तन कर झांसी की शक्ति को कई गुना बढ़ा दिया। अब झलकारी रानी लक्ष्मी बाई की चहेती बन गई थी।

लक्ष्मी बाई झलकारी को अपने आसपास ही रखना चाहती थी। समय बहुत खराब चल रहा था। कब अंग्रेजों के प्यादे वहां आ धमकें, कोई भरोसा नहीं था। अचानक खबर फैली कि अंग्रेज झांसी की ओर बढ़ रहे हैं। किले में खलबली मच गई।

अंग्रेजों से युद्ध

झांसी अंग्रेजों द्वारा घेर ली गई। अंग्रेज बहुत पहले से ही इस सुअवसर की तलाश में थे। उन्हें कुछ उड़ती-उड़ती खबर मिल गई थी कि रानी के कुछ विश्वासपात्र अपनी ढपली अलग बजाना चाह रहे हैं। पीर अली और दूल्हा जू रानी से खिलाफत करने लगे थे। रानी द्वारा स्त्री सेना की यदाकदा प्रशंसा कर देना उन्हें सह्य नहीं था। उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा था कि रानी उनके कार्यों की उपेक्षा कर दुर्गा दल को अधिक तरजीह देने लगी है। रानी के विशेष विश्वासपात्र होने के कारण उनका विरोध बहुत भयानक दृश्य उपस्थित कर सकता था, इसी बात का वे अनुचित लाभ उठाना चाहते थे। अंग्रेज़ों की नीति तो इसी बात की कायल थी। बिना एक पल भी नष्ट किए उन्होंने पीर अली और दुल्हा जू को प्रपंच में फंसा कर किले के द्वार खुलवाने की योजना बना ली।

आक्रमण की खबर उड़ते-उड़ते रानी तक पहुंची। रानी सावधान हो गई। प्रमुख सभासदों को बुलाकर उसने मंत्रणा की और सभी लोग उचित स्थान पर तैनात कर दिए गए। रानी स्वयं सैन्य बल के भोजन, पानी, अस्त्र-शस्त्र की व्यवस्था में जुट गई। विश्वासघात किए जाने की बात उसके उज्ज्वल मन-मस्तिष्क में दूर-दूर तक नहीं थी।

दीवान दूल्हा जू को भीतर ही भीतर कुछ कचोट रहा था। वह रानी को किसी भी सुअवसर पर छलने की ठाने बैठा था। ऐसे ही लालची लोगों ने सोने की चिड़िया भारत के पर काट कर उसे अंग्रेजी सत्ता की गुलामी के पिंजरे में कैद कर दिया था। रानी ने निस्संकोच हो दूल्हा जू और पीर अली को ओरछा गेट पर तैनात किया। पूरन उन्नाव गेट पर चौकसी कर रहा था। खाण्डेराव गेट पर सागर सिंह पूरी मुस्तैदी से अपना कर्तव्य निभा रहा था। दक्षिण में गौरा, पश्चिम में सभी जाति और धर्म के जवान अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित थे।

होनी को कुछ और ही मंजूर था। दूल्हा जू की अंग्रेजों से सांठ-गांठ तो पहले ही हो चुकी थी। उसकी नीयत में खोट आ गया था। अंग्रेजों के धावा बोलते ही ओरछा गेट पर अंग्रेजी सेना को प्रवेश मिल गया। बड़ी नाटकीयता से पीर अली और दूल्हा जू खाली फायर कर रहे थे और दुश्मन किले में सुगमता से रास्ता बनाकर प्रवेश कर रहा था। इन दोनों देशद्रोहियों ने देशभक्तों को धूल चटा दी। भांडेरी गेट पर पूरा कोरी समाज अपनी जान हंस-हंस कर लुटा रहा था और दतिया गेट पर राठौर वंश अपनी जान पर खेल रहा था। पीर अली और दूल्हा जू सबकी कुर्बानी पर पानी फेरने पर उतारू थे। दुर्गा दल ने अपनी बहादुरी से दुश्मनों के सर काट-काट कर बिछा दिए। उन्होंने अस्त्र-शस्त्रों से लैस अंग्रेजी सत्ता के छक्के छुड़ा दिए। स्त्री सेना की वीरता देखकर अंग्रेज त्राहि-त्राहि करने लगे। नारी दल इतना खूंखार हो सकता है, अंग्रेजों ने सपने में भी न सोचा था। ह्यूरोज की हिम्मत टूटने लगी।



द्वार खुल जाने से दुश्मन किले में प्रवेश पा गए जिससे 'दुर्गा दल' की कमांडर झलकारी रानी की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठी। वह बाहर अंग्रेजों से लोहा ले रही थी तथा भीतर-ही-भीतर रानी की सुरक्षा का उपाय सोच रही थी। देश और कर्तव्य की खातिर गोलदांज पूरन बहादुर इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। झलकारी खबर पाते ही कुछ देर के लिए सन्न-सी रह गई थी। किन्तु उसने स्वयं को शीघ्र ही संभाल लिया। यह समय अपने प्रियतम के वियोग में आंसू बहाने का नहीं था, अपितु कर्तव्य-पालन का था। झलकारी का उत्तरदायित्व जैसे और अधिक बढ़ गया। वह कर्तव्य के सामने पति-वियोग को भूल गई थी। झलकारी जानती थी कि प्रियतम के लिए सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि वह उसके सिद्धांतों का अनुकरण करे। यह समय रानी की मर्यादा को सुरक्षित रखने का था। दुश्मन किले में घुस गए थे और चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। झलकारी किसी तरह रानी के महल में पहुंची। पूरी सूचना देने के पश्चात उसने रानी को दत्तक पुत्र के साथ किले से बाहर निकालने की योजना बनाई। वह किसी सुरक्षित स्थान पर उन दोनों को पहुंचाना चाहती थी। रानी महल छोड़ने के हक में नहीं थी। जीते जी वह अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होना चाहती थी। लेकिन झलकारी ने उन्हें समझाया कि झांसी के लिए जान देने वाले बहुत से वीर योद्धा लड़ रहे हैं। इस समय प्रश्न रानी को और महल को सुरक्षित रखने का है। उन जैसे वीर तो बहुत हो जाएंगे लेकिन झांसी की रानी का जीवित रहना बहुत आवश्यक है। यदि रानी अंग्रेजों के उनके कब्जे में आ गई तो झांसी सदा के लिए उनकी बन जाएगी।

प्रश्न यह था कि रानी किले से बाहर कैसे जाए? किला चारों ओर से दुश्मन से घिरा हुआ था। झलकारी ने रानी से कहा, "महारानी! अपने गले का नौलखा हार, मुकुट आदि सभी साज-श्रृंगार मुझे दे दीजिए, यहां तक कि अपने वस्त्र भी। रानी यह सुनकर कुछ हिचकिचाई लेकिन झलकारी ने उन्हें यह कहकर आश्वस्त किया कि झांसी को बचाने के लिए ऐसा करना जरूरी है। रानी को साधारण क्षत्राणी के वेष में किले से बाहर किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाने की योजना बनाई गई। कड़ी सुरक्षा और पहरे में रानी को किले से बाहर निकाला गया। वह रानी को किले के द्वार से बाहर विदा कर वापस आ गई। अब उसने स्वयं रानी का वेश धारण किया तथा दुश्मन के सम्मुख पहुंच कर उसे ललकारने लगी। झलकारी को यकीन था कि यदि नदी-नाले आड़े नहीं आए तो आठ-दस घंटों में रानी खतरे से बाहर निकल जाएगी। झलकारी अब रणचंडी बनकर दुश्मनों पर टूट पड़ी। घमासान लड़ाई हुई। धरती रक्त-रंजित हो गई। झलकारी के रण-कौशल के समक्ष अंग्रेजों के सारे अस्त्र-शस्त्र निरर्थक सिद्ध हो रहे थे। ह्यूरोज की सेना उल्टे पांव भागने लगी। स्त्री दल की कमांडर ने तबाही मचा रखी थी। अंग्रेजों के लिए वह रानी लक्ष्मी बाई थी। रानी की वेशभूषा झलकारी ने अंग्रेजों को धोखे में डालने के लिए धारण की थी। अंग्रेज पूरी मुस्तैदी से उसे घेरने की फिराक में थे क्योंकि वे उसे रानी लक्ष्मी बाई ही समझ रहे थे। ह्यूरोज घबरा गया। उसने अपने साथी और झांसी के देशद्रोही पीर अली और दूल्हा जू को बुला भेजा। वह मंत्रणा करना चाहता था कि इस मुसीबत से छुटकारा कैसे पाया जाए। वह धोखेबाजों से मिलकर रानी को पकड़ पाने की कोई तरकीब या कोई षड्यंत्र रचना चाहता था।

दूल्हा जू बरसों से रानी के खास लोगों में से था। वह रानी से भली-भांति परिचित था तथा रानी की आवाज और चाल-ढाल के बारे में धोखा नहीं खा सकता था। ध्यान से देखने के बाद उसने ह्यूरोज को बताया कि वह जिसे रानी लक्ष्मी बाई समझ रहे हैं, वह लक्ष्मी बाई की नारी सेना अर्थात 'दुर्गा दल' की कमांडर झलकारी बाई है। झलकारी बाई को पहचानते ही अंग्रेज जैसे खोई हुई शक्ति पा गए। उन्होंने झलकारी को घेर कर गिरफ्तार कर लिया और रानी लक्ष्मी बाई की तलाश में दौड़ने लगे। झलकारी चिन्तित हो उठी। वह अपनी रानी को अंग्रेजों के हाथ में नहीं आने देना चाहती थी। लोभी देशद्रोही दूल्हा जू और पीर अली पर उसने बहुत रोष प्रकट किया। वह बोली, "तुम जैसे कायर कापुरुष लोगों द्वारा ही किसी देश की स्वाधीनता छिन जाती है। इतने पुराने सेवक तथा रानी का अपार स्नेह और धन पाने के बाद भी तुम्हें रानी के साथ धोखेबाजी करने में लाज नहीं आई? तुम्हारे द्वारा छले जाने की रानी ने कभी कल्पना भी न की थी। धिक्कार है तुम पर। कलंकित होकर जीने से तो अच्छा होता कि युद्ध में काम आ जाते। तुम कभी भी जीते जी मान-सम्मान के अधिकारी नहीं हो सकोगे। इतिहास काले अक्षरों में तुम्हारे इस घिनौने कृत्य को लिखेगा कि तुम ने एक स्वाभिमानी और उज्ज्वल मन की स्वामिनी रानी लक्ष्मी बाई को दुश्मन के हाथों में सौंप देने की कुचाल चली थी। तुम चुप ही रह जाते तो शायद इतिहास तुम्हें माफ कर देता। रानी को सुरक्षित रखने की मेरी योजना को असफल कर तुमने पाप कमाया। जीवन भर तुम इसका प्रायश्चित नहीं कर पाओगे। लानत है तुम पर ! जिस थाली में खाते रहे, उसी में छेद कर दिया। वाह रे बहादुरो ! नपुंसक जन्म-जन्म के।"

खूब धिक्कारा झलकारी ने दोनों देशद्रोहियों को। लेकिन अब हो भी क्या सकता था। फिर वह अंग्रेजों की ओर मुड़ी और बोली, "अगर तुम सचमुच मर्द हो तो मेरी हथकड़ियां खोल दो। तुम में पुरुषों वाली मान-मर्यादा नहीं है। एक स्त्री को जकड़ा हुआ है। तुम अशस्त हो। तुम में दम नहीं कि भारत की नारी से लोहा ले सको। बनते हो बहुत बहादुर, प्रवीण और प्रशिक्षित सैनिक। बेगैरत हो तुम! केवल फूट डालकर राज करने चले हो । इतिहास क्या तुम्हें कभी बख्शेगा।

झलकारी अंग्रेजी सेना के हाथ पड़ तो गई लेकिन वह उनके हाथों मरना नहीं चाहती थी। उसने सखी वीरबाला से अपने सीने में कटार उतार देने को कहा। सखी वीरबाला हिचकिचाई, लेकिन झलकारी के आग्रह ने उसे मजबूर कर दिया। वीरबाला के हाथों अपनी जीवन लीला समाप्त कर वह सदा के लिए सो गई और शहीद का पद पाकर इतिहास में अमर हो गई।

ISBN : 81-230-0977-1

मूल्य 20 रुपये

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

